तृतीय खण्ड (विवेचनात्मक भाग)

40 अंक

इस खण्ड के अन्तर्गत कुल दो प्रश्न विकल्पों के साथ पूछे जायेंगे। इनमें से प्रत्येक का उत्तर लगभग 400 शब्दों में देना होगा। इन दो प्रश्नों के क्रमशः 20 + 20 अंक निर्धारित हैं।

1. उक्त खण्ड के प्रथम प्रश्न के अन्तर्गत सांख्यकारिका की 1–30 कारिका में विवेचित विषयवस्तु से सम्बन्धित दो प्रश्न देकर एक का उत्तर पूछा जायेगा। 20 अंक

2. उक्त खण्ड के द्वितीय प्रश्न के अन्तर्गत योगसूत्र के प्रथम और द्वितीय पादों में वर्णित विषय से सम्बन्धित दो प्रश्न देकर एक का उत्तर पूछा जाएगा। इस प्रश्न के अन्तर्गत निम्नबिन्दु आधारस्वरूप होंगे –

योग का स्वरूप, चित्त का स्वरूप एवं वृत्तियां, चित्त की भूमियां, चित्त की अवस्थाएं, चित्त–निरोध के उपाय, समाधि, समाधि के भेद–प्रभेद, चित्त के अन्तराय, ईश्वर का लक्षण, चित्त एकाग्र करने के उपाय, अष्टांगयोग, चित्त की एकाग्रता से होने वाले लाभ।

सहायक पुस्तकें –

1. सांख्यतत्वकौमुदी – डा. आद्याप्रसाद मिश्र
2. सांख्यकारिका – शिवनारायण शास्त्री
3. सांख्यसिद्धान्त – उदयवीर शास्त्री
4. सांख्यतत्वकौमुदी – डा. रमाशंकर त्रिपाठी

एम.ए. उत्तरार्द्ध संस्कृत परीक्षा
2009–2010

(वर्ग – ब)

चतुर्थ प्रश्नपत्र : न्याय एवं वैशेषिक दर्शन

100 अंक

पाठ्यक्रम –

1. न्याय–सिद्धान्त–मुक्तावली (प्रथम खण्ड) – विश्वनाथ।
2. प्रशस्तपादभाष्य (साधर्म्य से लेकर परत्वापरत्व तक के अंश को छोड़कर समग्र)

समग्र पाठ्यक्रम पांच इकाईयों में तथा प्रश्नपत्र तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। इसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है –

पाठ्यक्रम की इकाइयाँ :–

प्रथम इकाई – न्यायसिद्धान्तमुक्तावली : प्रत्यक्ष खण्ड की कारिका 1 से 22 तक

द्वितीय इकाई – न्यायसिद्धान्तमुक्तावली : प्रत्यक्ष खण्ड की कारिका 23 से 46 तक

तृतीय इकाई – न्यायसिद्धान्तमुक्तावली : प्रत्यक्ष खण्ड की कारिका 47 से 65 तक

चतुर्थ इकाई – प्रशस्तपादभाष्य पूर्वार्द्ध (प्रारम्भ से मनः प्रकरण पर्यन्त)

पंचम इकाई – प्रशस्तपादभाष्य उत्तरार्द्ध (बुद्धि प्रकरण से अन्त तक)

प्रश्न पत्र का विस्तृत अंक विभाजन –

प्रथम खण्ड (वस्तुनिष्ठात्मक भाग) 10 अंक

इस खण्ड के अन्तर्गत विकल्परहित वस्तुनिष्ठात्मक दस प्रश्न पूछे जाएंगे। ये सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित होंगे तथा समस्त इकाइयों से समान रूप से सम्बद्ध होंगे।

द्वितीय खण्ड (व्याख्यात्मक भाग) 50 अंक

इस खण्ड के अन्तर्गत कुल पाँच प्रश्न (व्याख्याएं) शत प्रतिशत विकल्प के साथ पूछे जाएंगे। इनमें से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर (व्याख्या) लगभग 250 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंक निर्धारित हैं। इनका पाठ्यक्रम के अनुसार विभाजन निम्न प्रकार से है –

(क) न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के प्रत्यक्ष खण्ड की 1 से 22 कारिकाओं में से दो कारिकाएँ देकर किसी एक की व्याख्या मुक्तावली के आलोक में। 10 अंक

(ख) न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के प्रत्यक्ष खण्ड की 23 से 47 तक की कारिकाओं में से दो कारिकाएं देकर किसी एक की व्याख्या मुक्तावली के आलोक में। 10 अंक

(ग) न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के प्रत्यक्ष खण्ड की 47 से 65 तक की कारिकाओं में से दो कारिकाएं देकर किसी एक की व्याख्या मुक्तावली के आलोक में। 10 अंक

(घ) प्रशस्तपादभाष्य के पूर्वार्द्ध भाग से कोई दो व्याख्येय अंश देकर एक की सप्रसंग संस्कृत में व्याख्या पूछी जाएगी। 10 अंक

(ड) प्रशस्तपादभाष्य के उत्तरार्द्ध भाग से कोई दो व्याख्येय अंश देकर एक ही सप्रसंग व्याख्या पूछी जाएगी। 10 अंक

तृतीय खण्ड (निबन्धात्मक भाग) **40 अंक**

इस खण्ड के अन्तर्गत कुल दो प्रश्न विकल्पों के साथ पूछे जायेंगे। इनमें से प्रत्येक का उत्तर लगभग 400 शब्दों में देना होगा। इन दो प्रश्नों के क्रमशः 20 + 20 अंक निर्धारित हैं।

1. उक्त खण्ड के प्रथम प्रश्न के अन्तर्गत निम्नबिन्दु आधारस्वरूप होंगे –

न्यायसिद्धान्तमुक्तावली के प्रत्यक्ष खण्ड में विवेचित विषय–मंगलाचरण का प्रयोजन, ईश्वर–सिद्धि, पदार्थ–विभाग एवं स्वरूप, शक्ति और सादृश्य, पदार्थ का खण्डन, सामान्यनिरूपण एवं जातिबाधक, विशेष पदार्थ, समवाय पदार्थ, भेद सहित अभावनिरूपण, कारण लक्षणभेद सहित, अवयवी की सिद्धि, परमाणु की सिद्धि, शारीरात्मवाद का खण्डन, विज्ञानवाद का खण्डन, षोढासन्निकर्ष सहित प्रत्यक्ष निरूपण, अलौकिक सन्निकर्ष के भेद व लक्षण।

2. उक्त खण्ड के द्वितीय प्रश्न के अन्तर्गत निम्नबिन्दु आधारस्वरूप होंगे –

प्रशस्तपादभाष्य के निर्धारित भाग में से विवेचित विषय पृथिवी, जल,

तेज, वायु निरूपण, सृष्टि–संहार–प्रक्रिया, आत्मा, अविद्या, विद्या, हेत्वाभास, कर्म, संसारापवर्ग, सामान्य–विशेष, समवाय।

सहायक पुस्तकें :–

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – ज्वालाप्रसाद गौड
2. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (प्रत्यक्ष खण्ड) – डा. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री
3. भारतीय दर्शन न्याय – वैशेषिक – डा. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री
4. भारतीयन्यायशास्त्र – डा. ब्रह्ममित्र अवस्थी
5. वैशेषिकदर्शन – डा. श्री नारायण मिश्र
6. प्रशस्तपादभाष्य – सम्पादक डा. श्री नारायण मिश्र